टिफ्की की सगाई

टिफ्की की सगाई

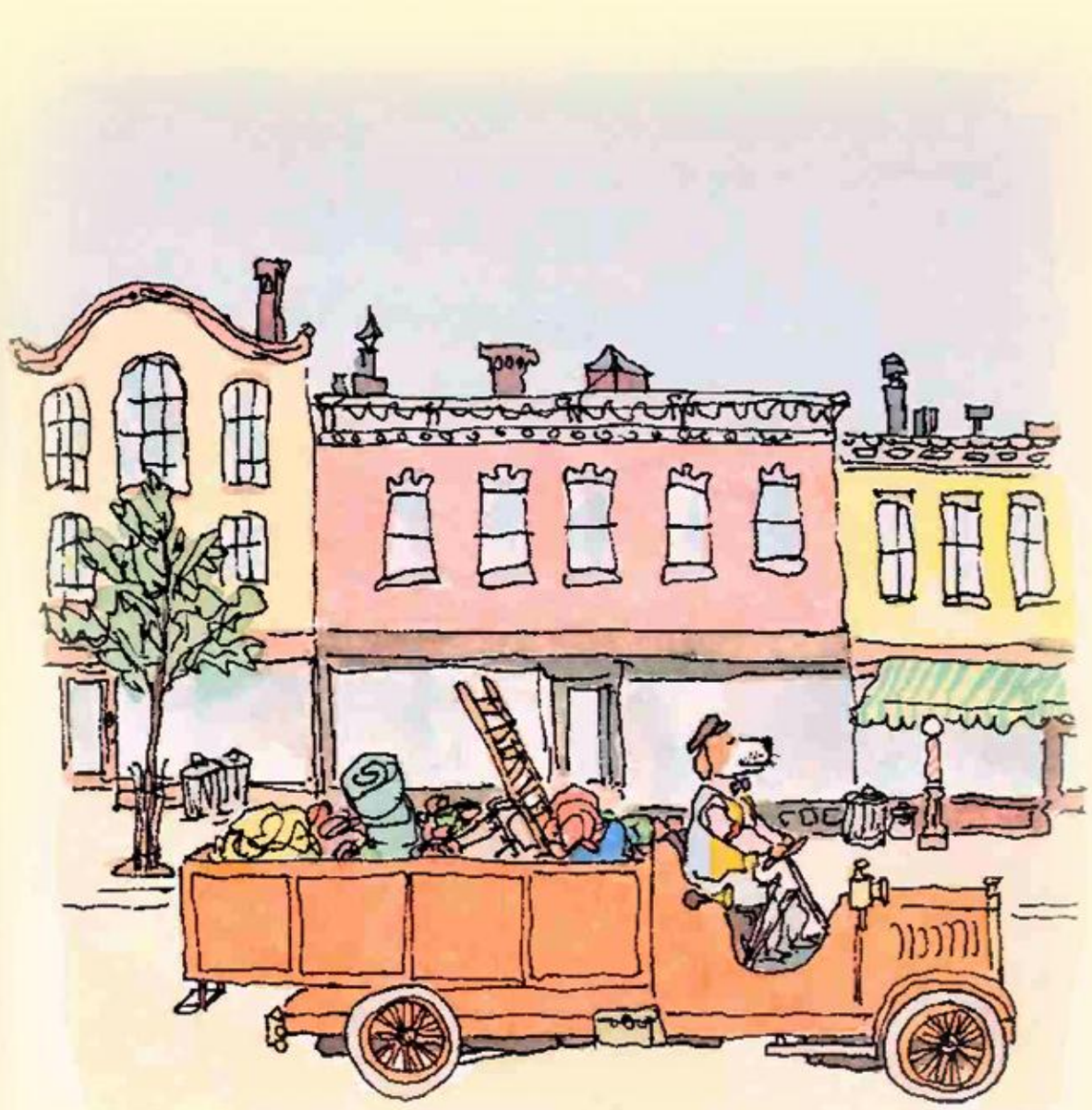

टिफ्की डियुकी कचरा इकट्ठा करता था. वो दिन भर मज़ाकिया मूड में रहता था. आज बढ़िया मौसम था. उसने आज अपना काम ख़त्म करके मॉस हॉलो में आयोजित पिकनिक में जाने की सोची.

उसने पहले से ही ट्रक में कचरा लोड किया था - गंदगी, प्लास्टिक की थैलियां, राख, सब्ज़ियों की छीलन, हड्डियां, बोतलें, डिब्बे, पेपर, फर और पंख, नाई की दुकान का सभी कबाड़ और अभी-अभी शहर में ख़त्म हुए मेले का कचरा भी.

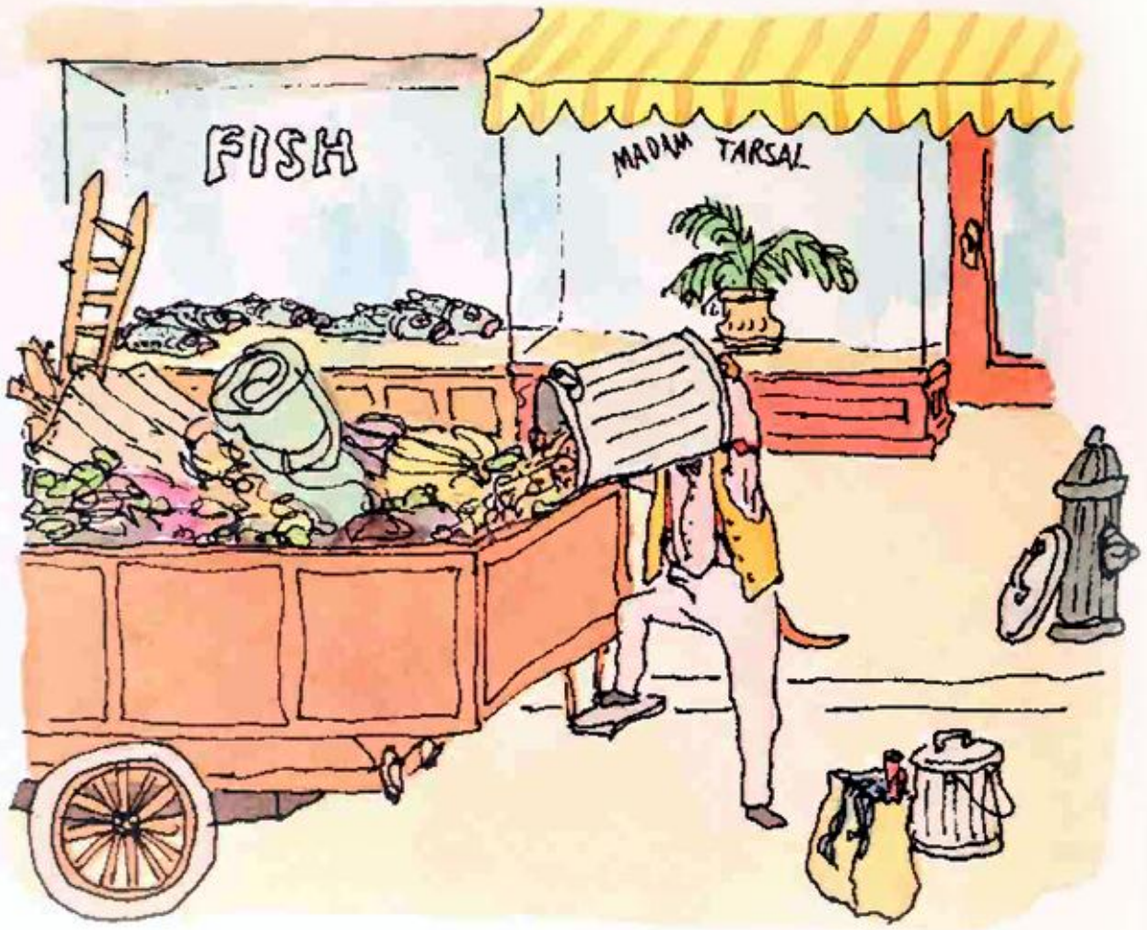

मैडम तारसाल के घर का कचरा उसने अपने ट्रक में डाला. मैडम तारसाल एक ज्योतिषी थीं. उसने उनसे अपने भाग्य के बारे में पूछने का मन बनाया. ऐसा बढ़िया दिन, क्या पता शायद सामान्य से कुछ अलग ही हो. आज क्या होने वाला था यह जानने को वो बड़ा इच्छुक था.

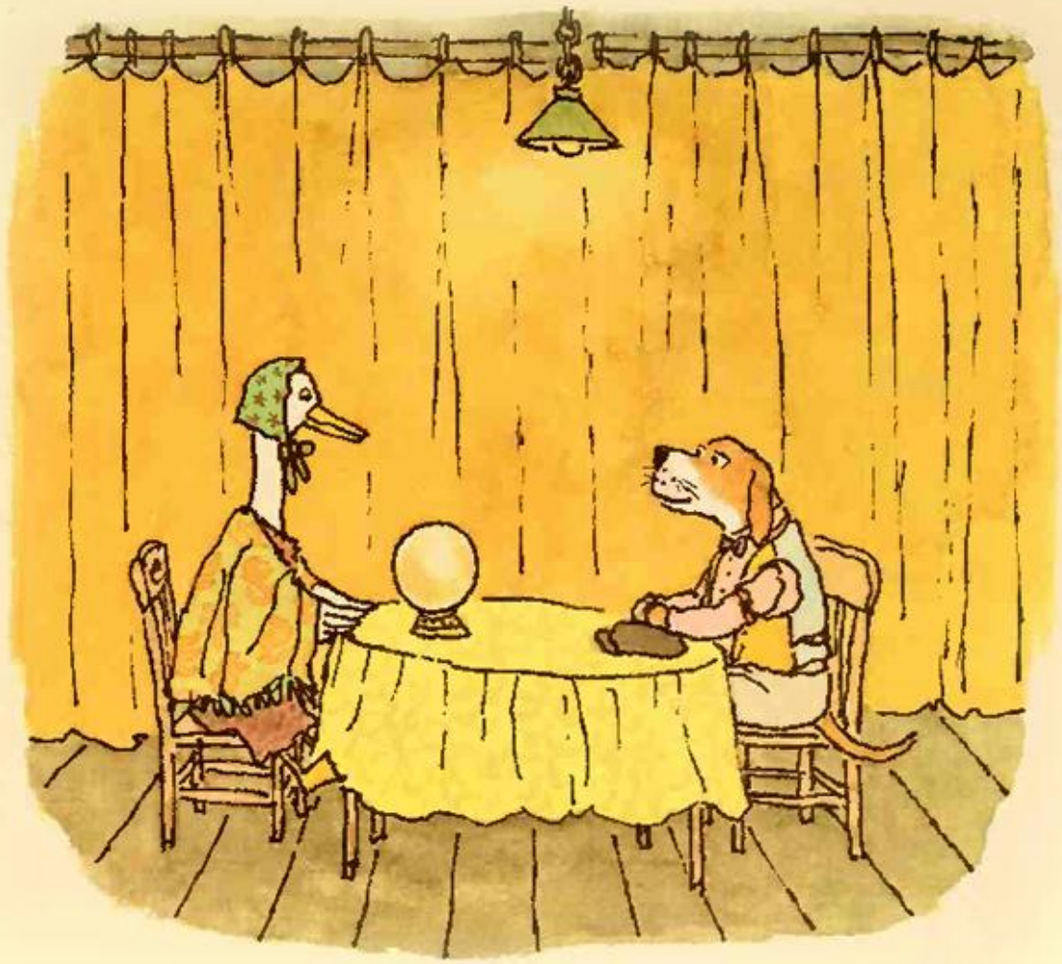

मैडम तारसाल उसे एक पर्दे के पीछे ले गईं, जहां एक गोल मेज पर एक लाइट चमक रही थी. टिफ्की अपना मुँह खोलकर वहां बैठ गया फिर उसने क्रिस्टल बॉल पर अपना हाथ रखा. अचानक मैडम तारसाल की छोटी आँखें चमक उठीं. "मेरे प्यारे टिफ्की डियुकी," वो बोलीं, "अनुमान लगाओ कि मैं क्रिस्टल बॉल में क्या देख रही हूँ! आज सूरज ढलने से पहले, तुम किसी के प्रेम में पड़ जाओगे फिर बाद में तुम उससे शादी करोगे. तुम चाहो तो भी उसे रोक नहीं पाओगे."

टिफ्की डियुकी जिस कुर्सी पर बैठा था उसने उसपर अपनी पूँछ मारी. "क्या मैं उसे पहले से जानता हूं?" उसने पूछा.

"तुम उसे पहले से बिल्कुल नहीं जानते हो," ज्योतिषी ने अपनी पलकों को झपकते हुए कहा.

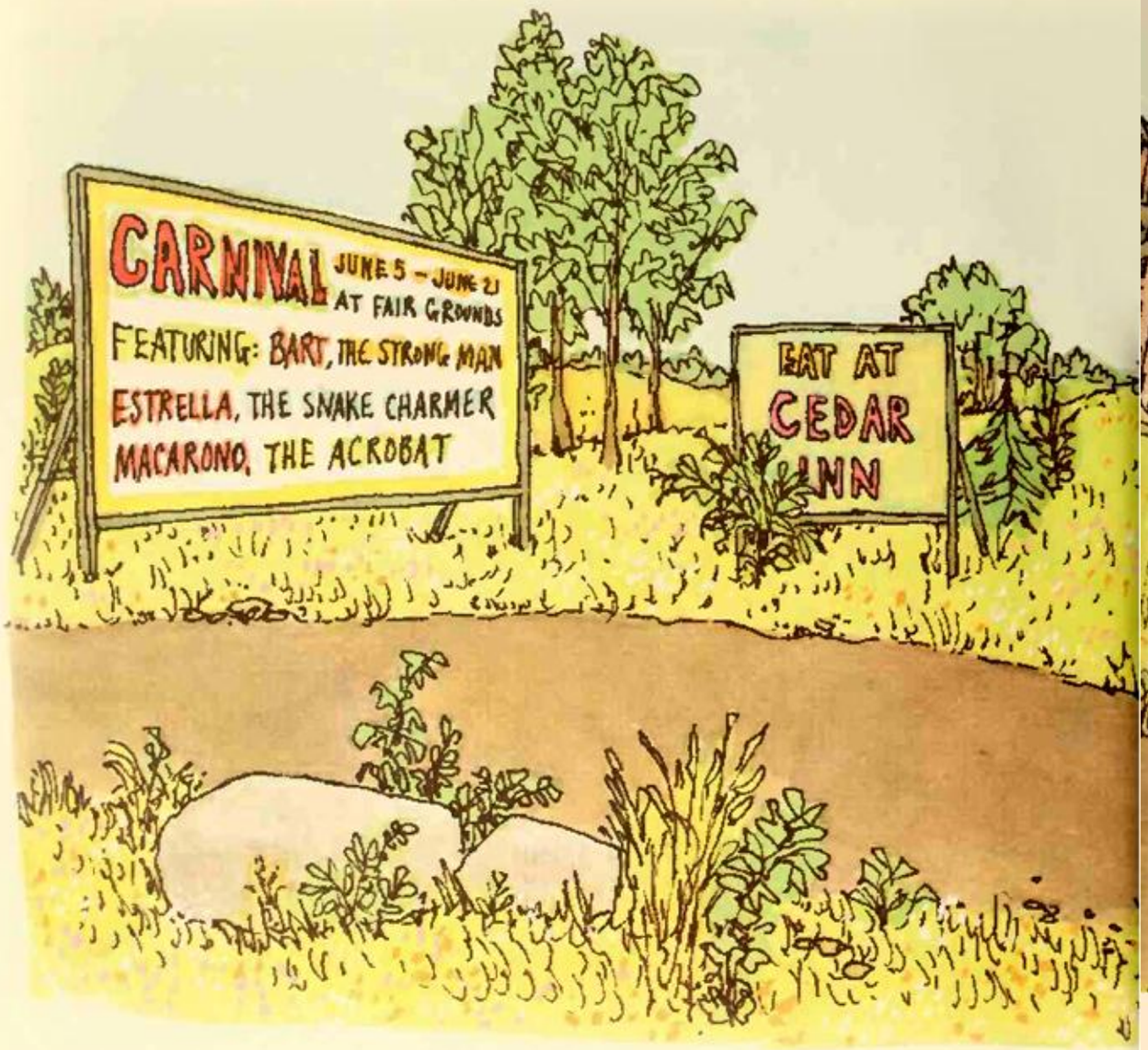

टिफ्की डियुकी ने अपनी बेल्ट को फहराया. उसने मैडम तारसाल को उनकी चोंच पर चूमा और फिर अपने ट्रक पर शहर के डंप के लिए रवाना हुआ. वो अब अपनी होने वाली प्रेमिका के सपने देख रहा था. उसके दिमाग में गुलाब के फूलों, ओस की बूंदों, चांदनी रातों, और चॉकलेट पुडिंग की छवियां आ रही थीं. कचरे की बदबू से भी वो विचलित नहीं हुआ. वो कचरे का सम्मान जो करता था.

उसके घर का फर्नीचर, जिस बिस्तर पर वो सोता था, उसका खाना, उसका स्टूल, उसका लैंप, उसकी छतरी, दीवारों के चित्र, सभी कचरे से आए थे. उसने जो कपड़े पहने थे, वे मलबे से ही आए थे.

"हो सकता है कि मैं उसे मलबे के डंप पर मिलूं," उसने सोचा और फिर वो तेज़ी से आगे बढ़ा. "लेकिन अधिक संभावना उससे क्लब पिकनिक में मिलने की थी."

जल्द ही मलबे का डंप उसके सामने था - कचरे का एक विशाल समुद्र. मलबे में खाने के टुकड़ों को ढूंढने के लिए कौवे आपस में लड़ रहे थे.

टिफ्की ने अपने ट्रक के पिछले डाले को झुकाया. और फिर फिसलता, टकराता हुआ कचरा ट्रक से नीचे गिरा. जब सारा मलबा नीचे फिसल रहा था तो टिफ्की को एक चमकता हुआ हार नज़र आया. उसने बड़ी सावधानी से अपने पंजे से उसे उठाया. वो कितना सुन्दर था! अब उसे यह पता लगाना होगा कि वो किसका था. उसने हार को अपनी गर्दन के चारों ओर बांध लिया.

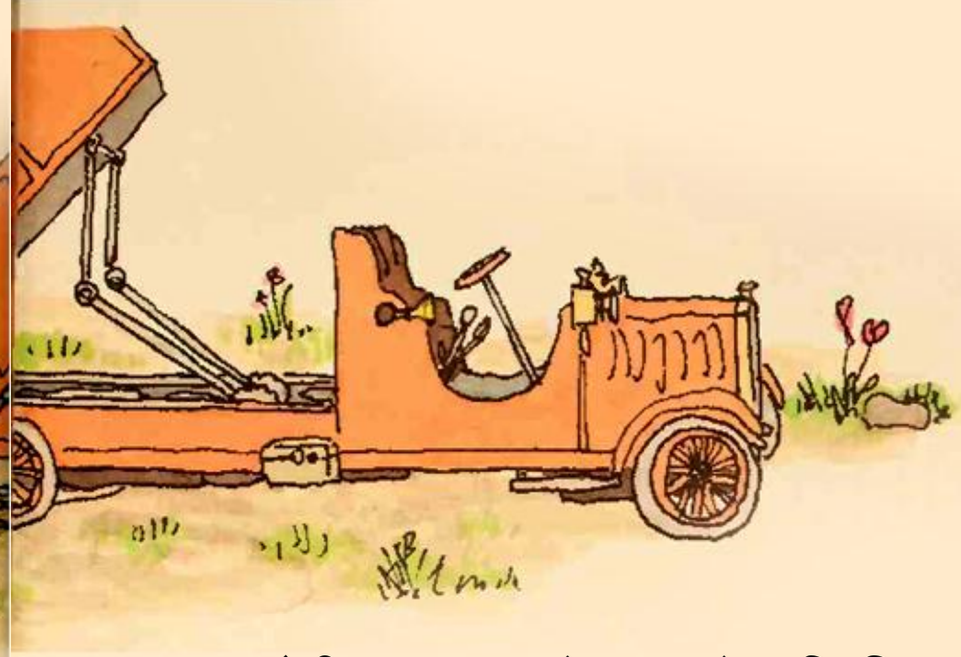

अब उसके दिन का काम पूरा हो गया था. वो अब पिकनिक पर जाने के लिए तैयार था. उसने अपने ट्रक को बैक किया और फिर नॉकनेगल रोड की तरफ बढ़ा. वॉटल कोर्नर के पास उसे साइकिल चलाती एक मुर्गी मिली. उसने हॉर्न बजाया और आगे जाने का रास्ता माँगा. लेकिन अचानक साइकिल घूमी और मुर्गी साइकिल के नीचे गिरी और अपने पैर पटकने लगी और चिल्लाने लगी.

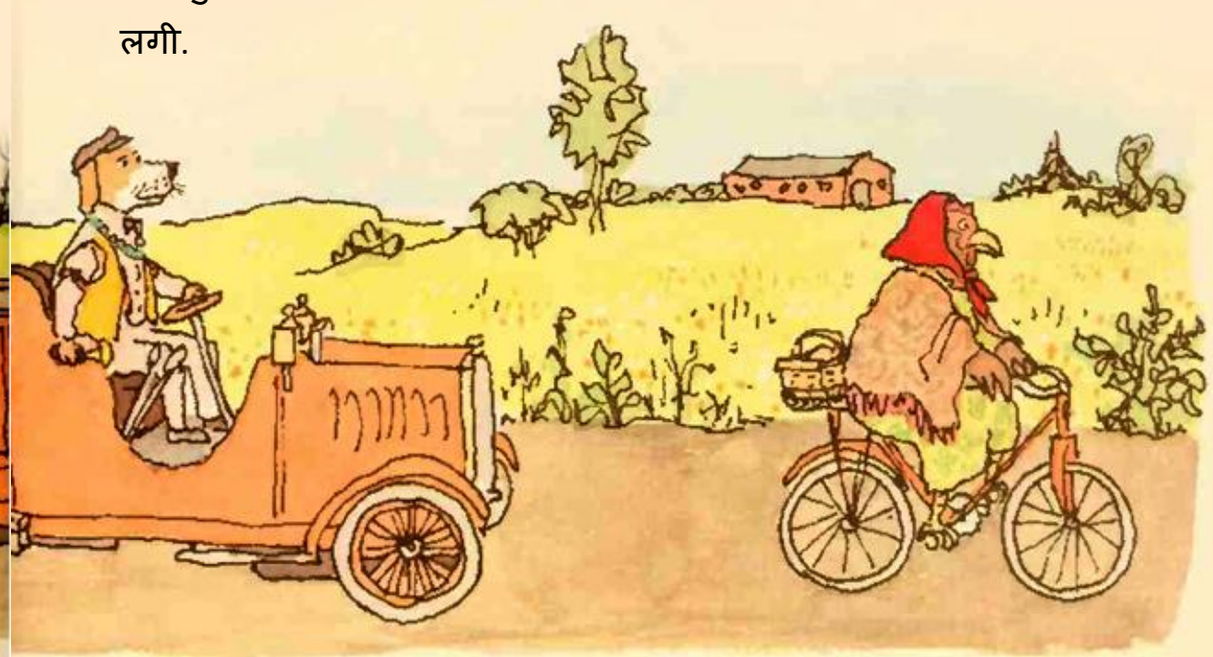

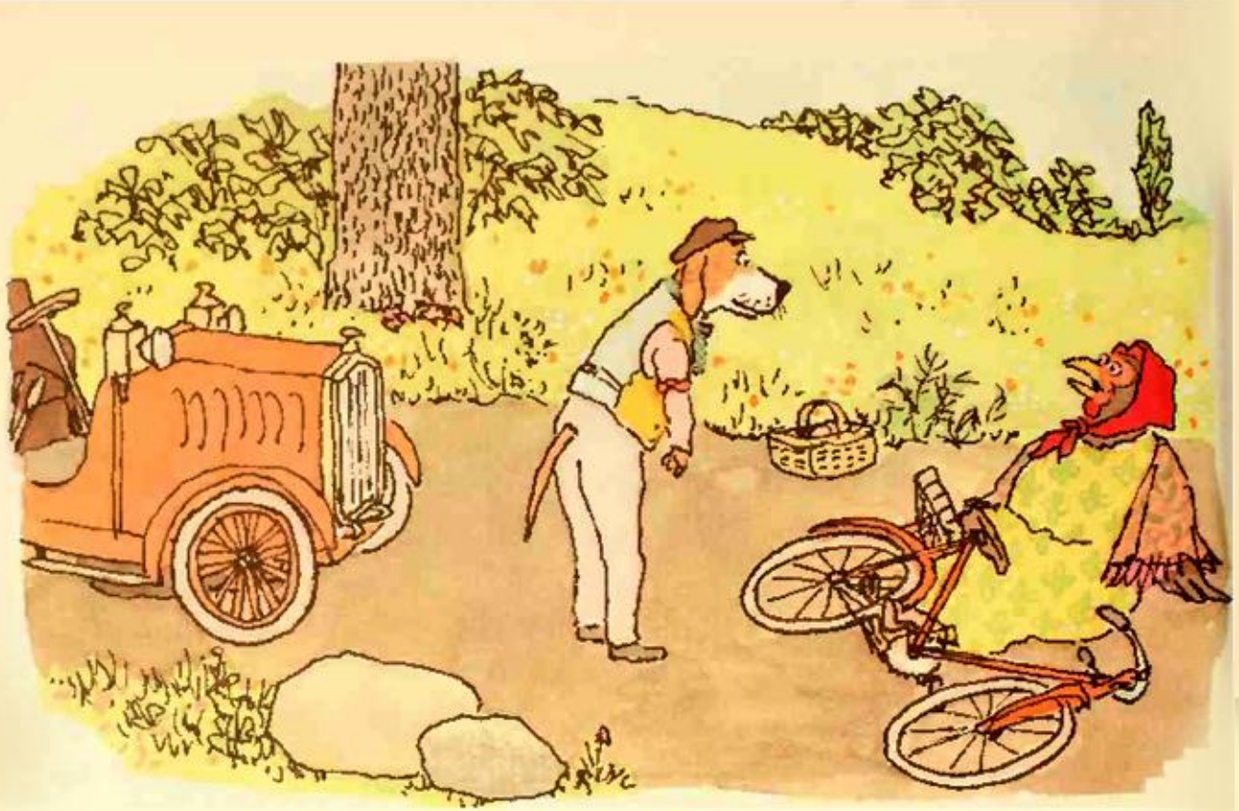

टिफ्की ने ब्रेक मारा और छलांग लगाकर बाहर उतरा. "भगवान बचाए इन नई साइकिलों से!" मुर्गी ने कहा. वो एक पीले रंग का फ्रॉक पहने थी." ट्रक की तेज़ हवा ने मुझे एक भँवर की तरह इधर-उधर हिला दिया!" उसने कहा. "साइकिल के पहियों में कुछ तो गड़बड़ है."

"क्या आप ठीक हैं, मैडम?" टिफ्की डियुकी ने पूछा.

"अभी तक नहीं पता," मुर्गी ने कहा. "मेरी कुछ मदद करो, वहां एक खम्बे जैसे खड़े मत रहो!" टिफ़्की ने उसे पंखों के नीचे से पकड़कर उठाया. फिर वो हिली और उसने शॉल को लपेटा. "मैं अब ठीक-ठाक हूँ," उसने घोषणा की. "तुम्हारा बहुत धन्यवाद."

"फिर मैं चलता हूँ," टिफ़्की ने कहा, "सूरज ढलने से पहले, आज मुझे मेरी प्रेमिका मिलेगी."

"मुझे पता है," मुर्गी ने कहा, "और जो हार तुम पहने हो वो उसी का है." टिफ्की ने अचरज में बूढ़ी मुर्गी को देखा. वह अब किसी भी जादू में विश्वास करने के लिए तैयार था. "तुमने मुझ पर एक एहसान किया है, युवा साथी," मुर्गी ने कहा.

"मैं अब तुम्हारे लिए कोई उपकार करूंगी. अच्छे काम का फल भी अच्छा ही होना चाहिए, सही? " टिफ्की ने सोचा वो जल्दी से जल्दी उठे और जाए. क्योंकि उसे देर हो रही थी, उसने अपनी घड़ी में देखा जो पिछले क्रिसमस के समय उसे मलबे में मिली थी.

बूढ़ी मुर्गी ने अपनी टोकरी में से एक छोटा धनुष और तीर निकाला. अपनी स्कर्ट को उठाकर उसने अपनी बाईं जांघ से तीन पंख निकाले. उसने पंखों को अपनी चोंच से छुआ और फिर कुछ रहस्यमय जंतर-मंतर पढ़े. "युवा साथी," उसने कहा, "मैं इस जादू के धनुष से इस जादू के तीर को मारूंगी. वो जहाँ जाकर गिरेगा वहीँ पर तुम्हें तुम्हारी सच्ची प्रेमिका मिलेगी."

"आपका बहुत धन्यवाद," टिफ्की ने कहा.

"टुट, टुट," बूढ़ी मुर्गी बोली, "यह छोटी सी बात है. मैंने कुछ ख़ास नहीं किया है. जो आगे होगा उसका आनंद लो." उसने अपनी लाल-लाल आँखों में से एक को उकसाया, और फिर तीर को धनुष पर चढ़ाकर मारा.

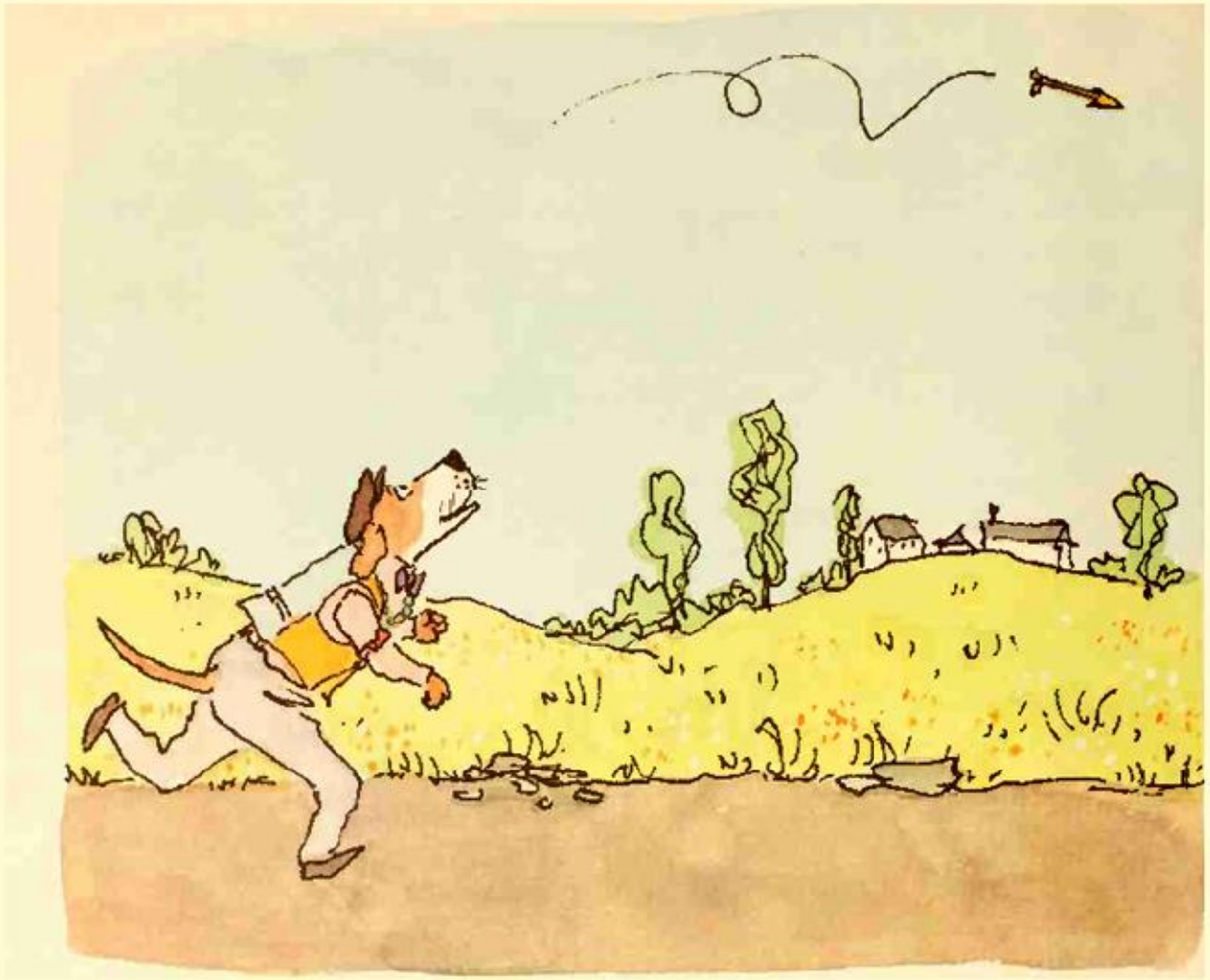

"एक बार फिर धन्यवाद!" टिफ़्की चिल्लाया, और वह तीर की दिशा में ही सड़क पर दौड़ा.

(बूढ़ी मुर्गी वास्तव में एक बुरी चुड़ैल थी, जिसने मैडम तारसाल से नफरत थी और वो हमेशा उसकी भविष्यवाणी को नाकाम करने की कोशिश करती थी. जैसे ही टिफ़्की डूफ्की तीर के पीछे भागा, चुड़ैल कटुता से खिलखिलाकर हंसी.)

थोड़ी देर के लिए सीधे जाने के बाद, तीर बाएं घूम गया. फिर तीर ने कई गोल चक्कर लगाए और फिर घूमता हुआ एक नई दिशा में चला गया. टिफ्की ने लगातार उसका पीछा किया. फिर कुछ देर बाद तीर पेड़ों के पास एक मैदान में जमीन पर गिर गया.

वहाँ एक महिला खड़ी थी, दुबली-पतली और सुन्दर, जो हाथ में एक छाता पकड़े हुए थी. जब टिफ़्की ने उसे देखा तो उसका दिल धड़कने लगा, और उसने पंजे से अपनी टोपी उठाई. अब उसे इस बात की चिंता नहीं थी कि वो क्या कहेगा क्योंकि सही शब्द अब हमेशा उसकी जुबां पर अपने आप आते थे.

मुस्कुराते हुए, उसने अपनी पूंछ को झुकाया. पर जब उसने खड़े होकर उसके चेहरे को देखा तो उसकी आँखें ही नहीं थीं - कोई चेहरा भी नहीं था! वो केवल भूसे का बना एक बिजूका (स्केर-क्रो) था. वो महिला एक बिजूका थी!

कितनी अप्रिय घटना थी वो! टिफ्की डियुकी ट्रक की ओर वापस जाने लगा. लेकिन अब उसके ट्रक का कोई नामो-निशान नहीं था. साथ में वो सड़क भी गायब थी जहाँ उसने ट्रक को छोड़ा था.

फिर वो पहले इधर चला, फिर उधर चला. वो अब पहले जैसी दुनिया नहीं थी. वो कहाँ था? वो कुछ आगे चला, किसी परिचित निशान की तलाश में, जिससे वो कहाँ था उसे इतना तो पता चले.

अच्छे कपड़े पहने एक बिल्ली, वहां एक पेड़ के ठूंठ पर बैठी अपने पंजों से मेन्डोलिन बजा रही थी. ऐसा लगा जैसे वो अजीब जगह उसका ही घर हो. टिफ्की शरमाते हुए उसके पास गया. "सर? मुझे माफ करें," उसने पूछा, "क्या आपने मेरा कचरे का ट्रक कहीं देखा है?"

"कचरा ट्रक? वो क्या बला है?" बिल्ली ने पूछा. उसकी आँखों में आलसी पीलापन था.

"क्या हम पोकविले के शहर की नॉकनेगल रोड के आसपास कहीं हैं?"

"मैंने उनके बारे में पहले कभी नहीं सुना," बिल्ली ने कहा.

"फिर पिन जोस्टर?" टिफ़्की ने कहा.

"शायद मैं तुम्हारी मदद कर सकती हूं," बिल्ली ने अपने मेन्डोलिन को रखते हुए कहा.

"मैं पिकनिक पर जा रहा था. मुझे आज अपनी भावी पत्नी से मिलना था - सूरज ढलने से पहले."

"अरे," बिल्ली ने अपनी मूंछ मरोड़ते हुए कहा, "सूरज पहले से ढल रहा है. मुझे अपनी बनियान से एक बटन दो?" और फिर किसी प्रतीक्षा किए बिना, उसने जेब की कैंची निकाली और टिफ़्की की बनियान से एक बटन काट लिया. अपने पंजों के बीच बटन पकड़ते हुए, उसने अपनी पीली आँखें बंद कीं और फिर बड़बड़ाई.

क्या वो पूर्व में जाए या फिर पश्चिम में?

क्या वो उत्तर में जाए या फिर दक्षिण में?

जवाब मेरे मुंह में डालो.

फिर उसने कुछ पल इंतजार किया, फिर, "ऊम, बा-बा-लूम," उसने कहा, "तुम्हारा ट्रक पहाड़ी के उस पार है."

"सर, बहुत धन्यवाद," टिफ़्की ने कहा, और फिर वो जल्दबाजी में वहां से चला. पहाड़ी के उस पार उसे घंटियों की मधुर आवाज़ सुनाई दे रही थी लेकिन उसे वहां कोई घंटी नहीं दिखी. उसे एक आवाज़ सुनाई दी, "टाय-इ-इज्फ़्की डू-ओओ-ओफ्स्की." लेकिन उसे कोई दिखाई नहीं दिया. वैसे वो कायर नहीं था, लेकिन वो असहज महसूस करने लगा. फिर जहाँ से आवाज़ आ रही थी वो उस दिशा में चलने लगा: वहाँ न जमीन थी, नीचे, नीचे.. वो गिर रहा था, गिर रहा था, मुड़ रहा था, गिर रहा था, और फिर वो धराशायी होकर ज़मीन पर गिर पड़ा. उसका सर चक्कर खाने लगा.

कुछ गायें उसके पास से घास चबाती हुई और गुनगुनाती हुई निकलीं.

टिफ्की वहाँ काफी देर तक लेटा रहा. जब उसने अपनी आँखें खोलीं, तो वह उसे वो चट्टान दिखी जिससे वो गिरा था. उसका शरीर दर्द कर रहा था. वह जानता था कि बहुत देर हो चुकी है. अब भला वो पिकनिक के लिए समय पर कैसे पहुँच पाएगा? अब वो अपनी प्रियतमा से कैसे मिल सकता था? ठीक है, मैडम तारसाल ने कहा था कि कोई भी उसे अपनी प्रियतमा से मिलने से नहीं रोक सकता था? फिर वो क्यों चिंता करें? जो होना है वो ज़रूर होगा.

तभी एक आदमी, तितली का पीछा करते हुए, जाल के साथ
उसके पास से गुज़रा. उसने टिफ्की को घूरा लेकिन कुछ भी कहा नहीं.

"मैं उस चट्टान से गिरा था," टिफ्की ने समझाया.

"मुझे पता है," आदमी ने कहा. "मैं तुम्हारे आने का इंतजार कर रहा था. मैं तुमसे पूछना चाहता था, क्या ऊपर कुछ तितलियां हैं?" फिर आदमी ने अपने सिर पर जाल डाला और एक कलाबाज़ी लगाई.

"मुझे वहां कोई तितली दिखाई नहीं दी," टिफ़्की ने उठकर कहा. "मेरा नाम टिफ्की डियुकी का नाम. आप कौन हैं?"

तितली के शिकारी ने कहा, "मैं? मैं एक पागल हूं." "ओह," टिफ़्की ने कहा. "तो फिर शायद आप नॉकनेगल रोड का रास्ता नहीं जानते होंगे."

"नहीं, मुझे पता है," पागल ने जोर से कहा. "नॉकनेगल रोड ठीक नीचे है .." और फिर वो टिफ़्की की चकित आँखों के सामने से ओझल हो गया. चट्टान और वो पूरा दृश्य एक पल में पिघल गया और टिफ़नी ने खुद को नॉकनेगल रोड पर पाया! (वो सब कैसे हुआ?)

खैर, उस बूढ़ी मुर्गी को अंडे सेने के लिए घर जाना पड़ा. अंडे ने उसका सारा ध्यान आकर्षित किया, और उसे पूरी थका दिया. इसलिए उसने खुद को पुराने जूतों की एक जोड़ी में बदला, क्योंकि उससे उसे कुछ आराम मिला. वो टिफ्की डियुकी को भूल गई. टिफ्की डियुकी उसके जादू-टोने से बच गया.)

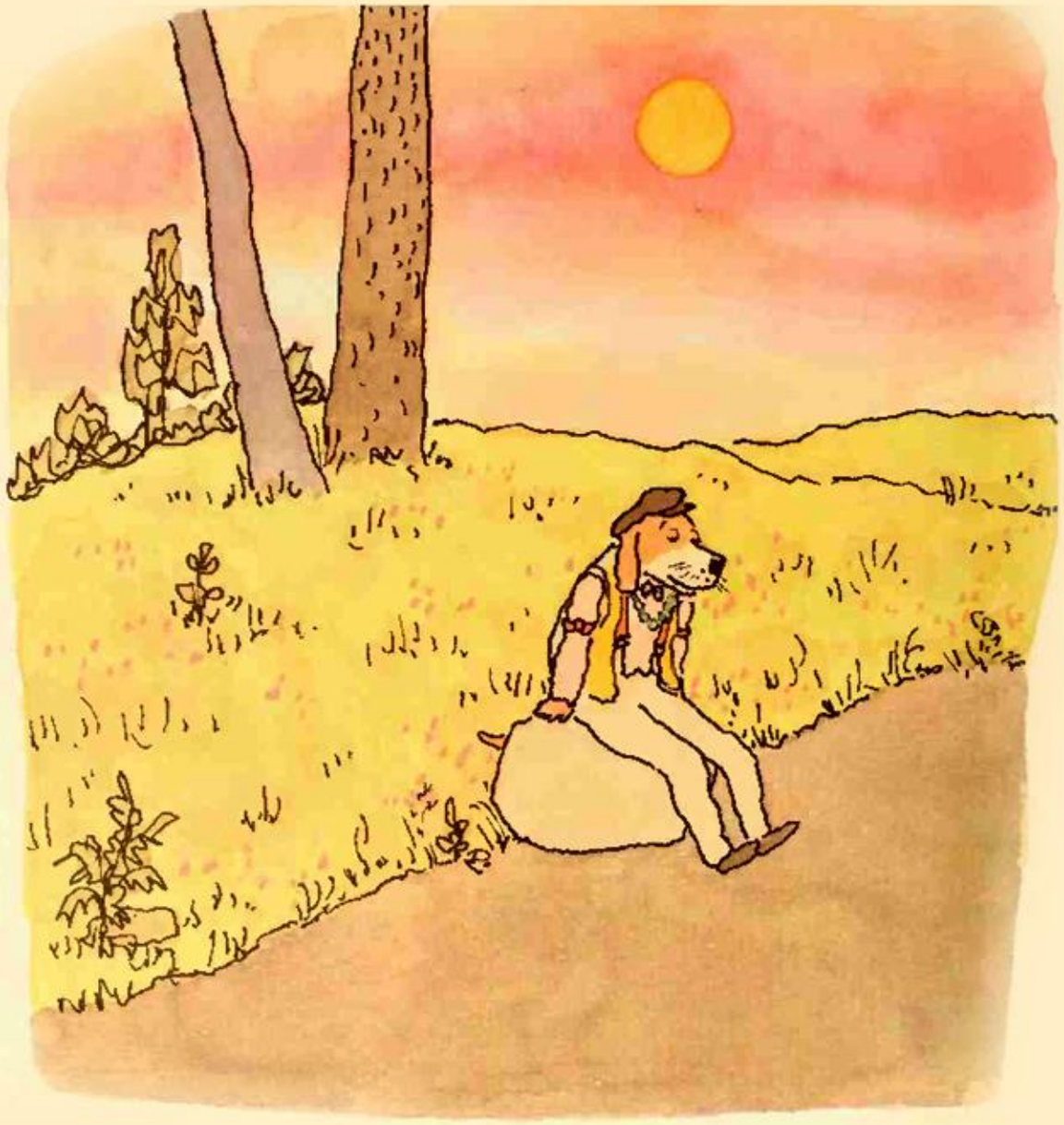

टिफ्की डियुकी थक कर एक चट्टान पर गिर गया. सूरज ढल रहा था और आग की लपटों जैसा लाल था. शायद अब मैडम तारसाल को एक नई और बेहतर क्रिस्टल बॉल की ज़रुरत थी. दिन लगभग ख़त्म होने को आया था और कोई प्रियतमा उसे नहीं मिली थी. कुछ अबाबीलें, कीड़ों पर झपट्टा मार रही थीं.

टिफ्की डियुकी ने सिर हिलाया. जल्द ही वो गहरी नींद में सो रहा था. उसे एक सपना आया: मैडम तारसाल उसके ऊपर उड़ीं, वो पैरों में एक क्रिस्टल बॉल पकड़े थीं. जब वो उसके ऊपर से गुज़री, तो उसने खुद को अपनी प्रियतमा के साथ आमने-सामने पाया. वे एक-दूसरे को दुलारते हुए फूलों के खेत में बैठे थे. उसका आलिंगन कोमल था. लेकिन वो लगातार मजबूत हो रहा था. और मजबूत. और अचानक.....

टिफ्की डियुकी कूदा. वो जागा तो वो एक अजगर के शिकंजे में कसा था! शक्तिशाली सांप ने उसे कसकर पकड़ा था. "मदद करो!" वो चिल्लाया. "मदद करो!" लेकिन जल्द ही वह चिल्ला सकने की हालत में भी नहीं रहा. अब वो अपनी जिंदगी की आखिरी सांसें ले रहा था. उसने मौत का हिम्मत के साथ सामना करने का फैसला किया. अब सूरज ढलने वाला ही था. "अलविदा, प्रिय दुनिया," टिफ़्की ने अपने मन में कहा. "अलविदा, महान सूरज. और अलविदा, प्रियतमा, आप जो कोई भी हों, और जहां भी हों!"

तभी कोई सड़क पर बहुत तेज़ी से आया. "डोलोरेस!" वो सांप पर चिल्लाई. "ढील दो," तभी अजगर ने तुरंत अपनी पकड़ ढीली कर दी, और फिर टिफ़्की डूफ्की के सामने जमीन पर आकर लेट गया.

टिफ्की ने कभी किसी को नहीं देखा जो उसे इतनी सुन्दर लगी हो. एक क्षण में वो उसके प्रेम में डूब गया. "जो आप गले में पहने हैं वो असल में मेरा हार है!" एस्ट्रेला ने कहा. "आपको यह कहां मिला?"

"मलबे के ढेर में, जब मैं आज वहां कचरा उतार रहा था," टिफ़्की ने खुद को यह कहते सुना. उसके दिमाग ने काम करना बंद कर दिया था. वो बेहद रोमांचित था.

"तो आप कचरा इकट्ठा करते हैं! मेरे प्यारे पिता भी कचरा इकट्ठा करते थे! क्या संयोग है!" एस्ट्रेला को यकीन था कि वह कभी इतने विनम्र आदमी से नहीं मिली थी, जैसा इंसान अब उसके सामने खड़ा था.

वे एक-दूसरे को घूरते रहे. जैसे-जैसे सूरज क्षितिज के नीचे डूबता गया, वैसे-वैसे दोनों उसकी सुनहरी किरणों में रंग गए.

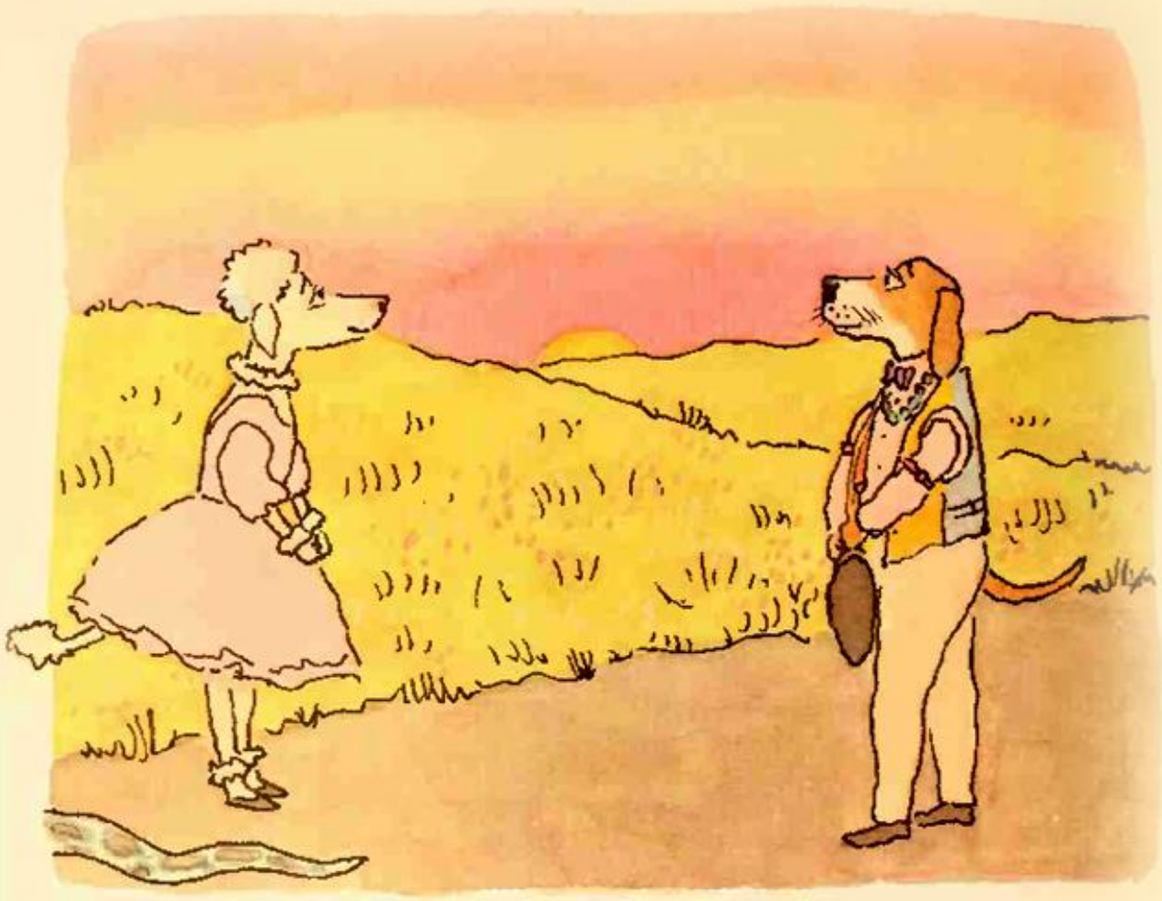

मैडम तारसाल अपना काम अच्छी तरह जानती थीं!

समाप्त